Ecc

Chapter 1

Hindi Interlinear

Reference: Hindi Easy-to-Read Version

1

דִּבְרֵי	קֹהֶלֶת	בֶּן־	דָּוִד	מֶלֶךְ	בִּירוּשָׁלִָם׃
वचन	कोहेलेत-के	पुत्र-	दाऊद-के	राजा	यरूशलेम-में
H1697	H6953		H1732	H4428	H3389

ये उपदेशक के शब्द हैं। उपदेशक दाऊद का पुत्र था और यरूशलेम का राजा था।

2

הֲבֵל	הֲבָלִים	אָמַר	קֹהֶלֶת	הֲבֵל	הֲבָלִים	הַכֹּל	הָבֶל׃
व्यर्थता	व्यर्थताओं-की	कहा	कोहेलेत-ने	व्यर्थता	व्यर्थताओं-की	सब-कुछ	व्यर्थता
H1892	H1892	H0559	H6953	H1892	H1892	H3605	H1892

उपदेशक का कहना है कि हर वस्तु अर्थहीन है और अकारथ है! मतलब यह का हर बात व्यर्थ है!

3

מַה־	יִּתְרוֹן	לָאָדָם	בְּכָל־	עֲמָלוֹ	שֶׁיַּעֲמֹל	תַּחַת	הַשָּׁמֶשׁ׃
क्या-	लाभ	मनुष्य-को	सारे-	परिश्रम-में	जो-वह-परिश्रम-करता-है	नीचे	सूर्य-के
H4100	H3504	H0120	H3605	H5999	H5998	H8478	H8121

इस जीवन में लोग जो कड़ी मेहनत करते हैं, उससे उन्हें सचमुच क्या कोई लाभ होता है? नहीं!

4

דּוֹר	הֹלֵךְ	וְדוֹר	בָּא	וְהָאָרֶץ	לְעוֹלָם	עֹמָדֶת׃
पीढ़ी	जाती-है	और-पीढ़ी	आती-है	परन्तु-पृथ्वी	सदा	बनी-रहती-है
H1755	H1980	H1755	H0935	H0776	H5769	H5975

एक पीढ़ी आती है और दूसरी चली जाती है किन्तु संसार सदा यूँ ही बना रहता है।

5

וְזָרַח	הַשֶּׁמֶשׁ	וּבָא	הַשָּׁמֶשׁ	וְאֶל־	מְקוֹמוֹ	שׁוֹאֵף	זוֹרֵחַ	הוּא	שָׁם׃
और-उदय-होता-है	सूर्य	और-अस्त-होता-है	सूर्य	और-	अपने-स्थान-को	हाँफता-हुआ	उदय-होता-है	वह	वहाँ
H2224	H8121	H0935	H8121	H0413	H4725		H2224	H1931	H8033

सूरज उगता है और फिर ढल जाता है और फिर सूरज शीघ्र ही उसी स्थान से उदय होने की शीघ्रता करता है।

6

הוֹלֵךְ	אֶל־	דָּרוֹם	וְסוֹבֵב	אֶל־	צָפוֹן	סוֹבֵב	סֹבֵב	הוֹלֵךְ	הָרוּחַ	וְעַל־	סְבִיבֹתָיו	שָׁב	הָרוּחַ׃
चलती-है	की-ओर-	दक्षिण	और-घूमती-है	की-ओर-	उत्तर	घूमते-	घूमते	चलती-है	वायु	और-	अपने-चक्करों-पर	लौटती-है	वायु
H1980	H0413	H1864	H5437	H0413	H6828	H5437	H5437	H1980	H7307		H5439	H7725	H7307

वायु दक्षिण दिशा की ओर बहती है और वायु उत्तर की ओर बहने लगती है। वायु एक चक्र में घूमती रहती है और फिर वायु जहाँ से चली थी वापस वहीं बहने लगती है।

7

כָּל־	הַנְּחָלִים	הֹלְכִים	אֶל־	הַיָּם	וְהַיָּם	אֵינֶנּוּ	מָלֵא	אֶל־	מְקוֹם	שֶׁהַנְּחָלִים	הֹלְכִים	שָׁם	הֵם	שָׁבִים	לָלָכֶת׃
सब-	नदियाँ	बहती-हैं	की-ओर-	समुद्र	परन्तु-समुद्र	नहीं-होता	भरा-हुआ	की-ओर-	स्थान	जहाँ-नदियाँ	बहती-हैं	वहाँ	वे	लौटती-हैं	बहने-के-लिए
H3605		H1980	H0413	H3220	H3220	H0369	H4392	H0413	H4725		H1980	H8033	H1992	H7725	H3212

सभी नदियाँ एक ही स्थान की ओर बार—बार बहा करती है। वे सभी समुद्र से आ मिलती हैं, किन्तु फिर भी समुद्र कभी नहीं भरता।

8

לִרְאוֹת	עַיִן	תִּשְׂבָּע	לֹא־	לְדַבֵּר	אִישׁ	יוּכַל	לֹא־	יְגֵעִים	הַדְּבָרִים	כָּל־	
देखने-से	आँख	तृप्त-होती	नहीं-	बोलने-में	मनुष्य	सकता	नहीं-	थका-देनेवाली	बातें	सब-	
H7200		H7646	H3808	H1696	H0376	H3201	H3808	H3023	H1697	H3605	

מִשְּׁמֹעַ׃	אֹזֶן	תִּמָּלֵא	וְלֹא־	
सुनने-से	कान	भरता	और-नहीं-	
H8085	H0241	H4390	H3808	

शब्द वस्तुओं का पूरा—पूरा वर्णन नहीं कर सकते। लेकिन लोग अपने विचार को व्यक्त नहीं कर पाते, सदा बोलते ही रहते हैं। शब्द हमारे कानों में बार—बार पड़ते हैं किन्तु उनसे हमारे कान कभी भी भरते नहीं हैं। हमारी आँखें भी, जो कुछ वे देखती हं, उससे कभी अघाती नहीं हैं।

9

חָדָשׁ	כָּל־	וְאֵין	שֶׁיֵּעָשֶׂה	הוּא	שֶׁנַּעֲשָׂה	וּמַה־	שֶׁיִּהְיֶה	הוּא	שֶׁהָיָה	מַה־	
नई	कोई-	और-नहीं-है	किया-जाएगा	वही	किया-गया-है	और-जो-	होगा	वही	हो-चुका-है	जो-	
H2319	H3605	H0369		H1931		H4100	H1961	H1931	H1961	H4100	

הַשָּׁמֶשׁ׃	תַּחַת
सूर्य-के	नीचे
H8121	H8478

प्रारम्भ से ही वस्तुएँ जैसी थी वैसी ही बनी हुई हैं। सब कुछ वैसे ही होता रहेगा, जैसे सदा से होता आ रहा है। इस जीवन में कुछ भी नया नहीं है।

10

אֲשֶׁר	לְעֹלָמִים	הָיָה	כְּבָר	הוּא	חָדָשׁ	זֶה	רְאֵה־	שֶׁיֹּאמַר	דָּבָר	יֵשׁ
जो	युगों-में	थी	पहले-से	है	नई	यह	देखो-	जिसके-विषय-में-कहे	बात	है
	H5769	H1961	H3528	H1931	H2319	H2088	H7200	H0559	H1697	H3426

מִלְּפָנֵנוּ׃	הָיָה
हमसे-पहले	थे
H6440	H1961

कोई व्यक्ति कह सकता है, “देखो, यह बात नई है!” किन्तु वह बात तो सदा से हो रही थी। वह तो हमसे भी पहले से हो रही थी!

11

שֶׁיִּהְיוּ	עִם	זִכָּרוֹן	לָהֶם	יִהְיֶה	לֹא־	שֶׁיִּהְיוּ	לָאַחֲרֹנִים	גַּם	לְרִאשֹׁנִים	זִכָּרוֹן	אֵין
जो-होंगे	साथ	स्मरण	उनका	होगा	नहीं-	जो-होंगे	बाद-वालों-का	और-भी	पहलों-का	स्मरण	नहीं-है
H1961		H2146	H1992	H1961	H3808	H1961	H0314	H1571	H7223	H2146	H0369

פ	לָאַחֲרֹנָה׃
—	अंत-में
	H0314

वे बातें जो बहुत पहले घट चुकी हैं, उन्हें लोग याद नहीं करते और आगे भी लोग उन बातों को याद नहीं करेंगे जो अब घट रही हैं और उसके बाद भी अन्य लोग उन बातों को याद नहीं रखेंगे जिन्हें उनके पहले के लोगों ने किया था।

12

בִּירוּשָׁלִָם׃	יִשְׂרָאֵל	עַל־	מֶלֶךְ	הָיִיתִי	קֹהֶלֶת	אֲנִי
यरूशलेम-में	इस्राएल	पर-	राजा	था	कोहेलेत	मैं
H3389	H3478		H4428	H1961	H6953	H0589

मैं, जो कि एक उपदेशक हूँ, यरूशलेम में इस्राएल का राजा हुआ करता था और आज भी हूँ।

13

אֲשֶׁר	כָּל־	עַל	בְּחָכְמָה	וְלָתוּר	לִדְרוֹשׁ	לִבִּי	אֶת־	וְנָתַתִּי		
जो	सब-	विषय-में	बुद्धि-से	और-छानबीन-करने-में	खोजने-में	अपना-मन	—	और-मैंने-लगाया		
	H3605		H2451	H8446	H1875		H0853	H5414		

הָאָדָם	לִבְנֵי	אֱלֹהִים	נָתַן	רָע	עִנְיָן	הִוא	הַשָּׁמָיִם	תַּחַת	נַעֲשָׂה
मनुष्य-के	पुत्रों-को	परमेश्वर-ने	दिया-है	बुरा	कठिन-कार्य	यह	आकाश-के	नीचे	किया-जाता-है
H0120		H0430	H5414		H6045	H1931	H8064	H8478	

בָּהּ׃	לַעֲנוֹת
उसमें	लगे-रहने-के-लिए

मैंने निश्चय किया कि मैं इस जीवन में जो कुछ होता है उसे जानने के लिये अपनी बुद्धि का उपयोग करते हुए उसका अध्ययन करूँ। मैंने जाना कि परमेश्वर ने हमें करने के लिये जो यह काम दिया है वह बहुत कठिन है।

וּרְעוּת	הֶבֶל	הַכֹּל	וְהִנֵּה	הַשָּׁמֶשׁ	תַּחַת	שֶׁנַּעֲשׂוּ	הַמַּעֲשִׂים	כָּל־	אֶת־	רָאִיתִי	14
और-वायु-को	व्यर्थता	सब-कुछ	और-देखो	सूर्य-के	नीचे	जो-किए-जाते-हैं	कार्यों-को	सब-	—	मैंने-देखा	
H7469	H1892	H3605	H2009	H8121	H8478		H4639	H3605	H0853	H7200	
										רוּחַ׃	
										पकड़ना	
										H7307	

> इस पृथ्वी पर की सभी वस्तुओं पर मैंने दृष्टि डाली और देखा कि यह सब कुछ व्यर्थ है। यह वैसा ही है जैसा वायु को पकड़ना।

לְהִמָּנוֹת׃	יוּכַל	לֹא־	וְחֶסְרוֹן	לִתְקֹן	יוּכַל	לֹא־	מְעֻוָּת	15
गिनी-जाना	सकती	नहीं-	और-घटी	सीधा-होना	सकता	नहीं-	टेढ़ा	
H4487	H3201	H3808	H2642	H8626	H3201	H3808	H5791	

> तुम उन बातों को बदल नहीं सकते। यदि कोई बात टेढ़ी है तो तुम उसे सीधी नहीं कर सकते और यदि किसी वस्तु का अभाव है तो तुम यह नहीं कह सकते कि वह वस्तु वहाँ है।

עַל	חָכְמָה	וְהוֹסַפְתִּי	הִגְדַּלְתִּי	הִנֵּה	אֲנִי	לֵאמֹר	לִבִּי	עִם־	אֲנִי	דִּבַּרְתִּי	16
से-अधिक	बुद्धि	और-जोड़ी-है	बढ़ाई-है	देखो	मैंने	कहते-हुए	अपने-मन	में-	मैंने	कहा	
	H2451	H3254	H1431	H2009	H0589	H0559			H0589	H1696	
וָדָעַת׃	חָכְמָה	הַרְבֵּה	רָאָה	וְלִבִּי	יְרוּשָׁלִָם	עַל־	לְפָנַי	הָיָה	אֲשֶׁר־	כָּל־	
और-ज्ञान	बुद्धि	बहुत	देखी-है	और-मेरे-मन-ने	यरूशलेम	पर-	मुझसे-पहले	थे	जो-	सब-	
H1847	H2451		H7200		H3389		H6440	H1961		H3605	

> मैंने अपने आप से कहा, “मैं बहुत बुद्धिमान हूँ। मुझसे पहले यरूशलेम में जिन राजाओं ने राज्य किया है, मैं उन सब से अधिक बुद्धिमान हूँ। मैं जानता हूँ कि वास्तव में बुद्धि और ज्ञान क्या है!”

זֶה	שֶׁגַּם־	יָדַעְתִּי	וְשִׂכְלוּת	הוֹלֵלוֹת	וְדַעַת	חָכְמָה	לָדַעַת	לִבִּי	וָאֶתְּנָה	17
यह	कि-यह-भी-	मैंने-जाना	और-मूर्खता	पागलपन	और-ज्ञान	बुद्धि	जानने-में	अपना-मन	और-मैंने-लगाया	
H2088	H1571	H3045		H1947	H3045	H2451	H3045		H5414	
							רוּחַ׃	רַעְיוֹן	הוּא	
							पकड़ना	वायु-को	है	
							H7307	H7475	H1931	

> मैंने यह जानने का निश्चय किया कि मूर्खतापूर्ण चिन्तन से विवेक और ज्ञान किस प्रकार श्रेष्ठ हैं। किन्तु मुझे ज्ञात हुआ कि विवेकी बनने का प्रयास वैसा ही है जैसे वायु को पकड़ने का प्रयत्न।

מַכְאוֹב׃	יוֹסִיף	דַּעַת	וְיוֹסִיף	כָּעַס	רָב־	חָכְמָה	בְּרֹב	כִּי	18
पीड़ा	बढ़ाता-है	ज्ञान	और-जो-बढ़ाता-है	खेद	बहुत-	बुद्धि-में	बहुत-	क्योंकि	
H4341	H3254	H1847	H3254			H2451	H7230		

> क्योंकि अधिक ज्ञान के साथ हताशा भी उपजती है। वह व्यक्ति जो अधिक ज्ञान प्राप्त करता है वह अधिक दुःख भी प्राप्त करता है।